© 2019 IJSRSET | Volume 6 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

व्रणोरुढ़ग्रन्थि' में काव्य के नवीन आयाम

डॉ0 (श्रीमती) मधु सत्यदेव
एसोसिएट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
दी0द0उ0 गेरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर

आधुनिक संस्कृत साहित्य अपने रचना वैशिष्ट्य एवं भावबोध के नवीन परिदृश्य से काव्य की अभिव्यक्ति कर रहा है। वास्तव में काव्य एक ऐसी विधा है जो दृश्य श्रवणेन्द्रिय द्वारा मानसिक तृप्ति कराती है। उसका कोई मूर्त स्वरूप नहीं होता। केवल शब्द और अर्थ के सामंजस्य से कवि और भावक के मध्य सेतु के रूप में प्रतिष्ठित होती है, परन्तु इसके लिये आवश्यक है कि काव्य जीवन की प्रचारात्मक अभिव्यक्ति न होकर यथार्थ अभिव्यक्ति बने। इस दृष्टिकोण से आधुनिक संस्कृत के कवि हर्षदेव माधव का विशेष स्थान है। उन्होंने अपनी कविता में व्यापक विषयों को उठाया है जिसमें नवीन प्रयोगशीलता, संवेदना तथा विश्लेषण के साथ व्यष्टि से समष्टि की यात्रा दिखाई पड़ती है। उनकी रचनाओं को नवप्रवर्तन को सम्भव करने वाली कविता की संज्ञा दी गयी है।

'व्रणोरुढ़ग्रन्थि' हर्षदेव माधव का एक ऐसा काव्य संकलन है जिसमें शब्दों के ऐन्द्रिय चित्र मानवीय भाव और संवेगों से अनुप्रणित हैं। इसमें विशिष्ट लाक्षणिक सन्दर्भों को अभिव्यक्त

करने के लिए प्रतीकों का प्रयोग किया गया है। वस्तुतः प्रतीकवाद आधुनिक कविता से जुड़कर है जिसमें संदिग्ध कल्पना के भावनिष्ठ संकेत होते हैं।

हर्षदेव माधव के प्रतीकों की आभामयी प्रस्तुति रोचकता को बढ़ाती है। उनके नये प्रतिमान और बिम्बों के दुलर्भ प्रयोग उनकी प्रज्ञा के अद्‌भुत वातायनों की ओर संकेत करते हैं। नये प्रतीकों के कारण ही प्रयोग सम्बन्धी परिवर्तन सम्भव हो सके हैं क्योंकि पुराने प्रतीक अत्यन्त रुढ़ होने के कारण सामयिक नहीं है। वस्तुतः आधुनिक परिस्थितियाँ एवं मानव मन की मनोवैज्ञानिक व्याख्या करने हेतु नवीन प्रतीकों के सृजन की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। इसीलिए हर्षदेव माधव ने व्रणोरुढ़ग्रन्थि में अपनी संचित वेदना को विभिन्न बिम्बें और नवीन प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस संकलन में जीवन के अनुछुए पहलुओं को अभिव्यक्त करती हुई 120 कवितायें हैं। परम्पराओं का नवो–मेष के साथ आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अभिव्यंजन उनकी विशेषता है। व्रणो (घावों) के भी अपने–अपने प्रकार तथा पहचान है। पाटलवर्णी घाव प्रेम में मिला घाव और है और शत्रु से मिले घाव नीले है और जो घाव मित्रों ने दये है। वह रक्त–श्याम घाव है पुराने घाव अब भले ही प्रस्फुटित होकर पीड़ा न देते हो परन्तु हर दिन नया घाव जन्म ले रहा है। इन घावों को अरण्य में किसी ने नहीं देखा कि इनको सहने से महावीरत्व प्राप्त हुआ हो परन्तु इन प्रहारों को सहने के लिए जितनी तितिक्षा, क्षमा, धीरता तथा वीरता चाहिए उसकी चर्चा कहीं नहीं है। कवि की वेदना यही है कि वह जो लिख रहा है उसे अनुभूत करने के लिए सहृदय पाठक है अथवा नहीं।[1]

व्रणोरुढ़ग्रन्थि संकलन की प्रथम कविता है। हे जीवन बीमा–प्रतिनिधि, इसमें कवि कहता है कि यदि जीवन बीमा की समस्त योजनायें प्रकृति, पशु–पक्षी व समस्त प्राणीमात्र प्रदान करती हो तो वह समस्त योजनाओं का शुल्क भरने को तैयार है। यह कविता कवि के प्रकृति–प्रेम,

मानवीय प्रेम व शाश्वत मूल्यों का स्वीकार है तो बाम्ब महाशय, आहवयति वृद्धाम्बा मागैकश्चिद सूचना, जिवितसंगणके, मृत्योः सेवाकेन्द्रम् वर्तमानपत्रस्य लघुकानि विज्ञापनानि आदि कविताओं में वर्तमान कालिक विडम्बनाओं को कवि ने नवीन बिम्बों और प्रतीकों के माध्यम से निराले ढंग से प्रस्तुत किया है। एक लघु कविता ''शाती'' में कम–नपे–तुले शब्दों में धूल धूसरित साड़ी के माध्यम से मातृत्व की गरिमा को प्रकट कर अपनी अद्भुत भावामिव्यज्ञ्जकता का उदाहरण प्रस्तुत किया है।[2] इसके पश्चात् कवि ने दिखाया है कि साड़ी जो सम्मान का प्रतीक थी, जिसके खिंचने ने महाभारत को जन्म दिया वह अब महत्वहीन हो गयी है अतः मिथक का नवीन प्रयोग करके उसे आधुनिक परिवेश से जोड़ दिया है।[3] मनुष्य का अस्तित्त्व पीड़ा का पर्याय व उसका पंचेन्द्रिय बोध संवेदना–शून्य हो गया है। इस स्थिति को कवि ने नवीन बिम्बों व प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया है।[4] कवेः प्रभष्टश्चलदूटभाषः नामक कविता में मोबाइल के खो जाने की घटना को कवि ने प्रत्यक्षतः विषय बनाया है परन्तु यहाँ उसका उद्देश्य अप्रत्यक्ष में भाषा की संवादकला के नष्ट होने से है। मोबाइल प्रतीक है और उसके विभिन्न कार्य जैसे मिस्ड काल, रिसीव काल, एसएमएस आदि एक वातावरण की सृष्टि करते है। इसके अतिरिक्त शिक्षा व्यवस्था से माधव सन्तुष्ट नहीं है। बच्चों का बचपन छीना जा रहा है उन्हें शिक्षित मनुष्य बनाने के स्थान पर साक्षर व्यवसायी बनाने की योजना है। कवि का प्रश्न है कि क्या समय की धारा फिर से बच्चों का बचपन लौटा सकेगी? यहाँ शिक्षा में बढ़ता हुआ बस्तों का भार बालकों से उनको शैशव छीन रहा है। इसके लिए पुस्तकों का अधिक्य, उन्हें दिया जाने वाला गृहकार्य और शिक्षक सब दोषी हैं किन्तु इसकी रिपोर्ट के लिए कोई स्थान नहीं है। समस्त तथ्य शिक्षा की दोषपूर्ण व्यवस्था को इंगित करते है जिसका कोई समाधान नहीं दिखाई दे रहा है।[5] कवि ने 'संक्षिप्त संदेश सेवा' कविता में शिक्षण विषय में एक वृहत संदेश दिया है कि 'प्रकृति के खुले प्रांगण में जितना सीखा

जा सकता है वह पुस्तकों द्वारा नहीं। बच्चों के कोमल कंधों पर पुस्तकों का बोझ आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर करारा व्यंग्य है।[6]

लघु कल्पना काव्य की नवीन परिकल्पना को उन्होंने अनेक प्रकार के बिम्बविधानों से संस्कृत के परम्परागत स्वरूप को एक नया प्रवाह दिया है। इसी प्रकार अवकारिका तटः, शकृत सूर्या तपः, आविल प्रणाली काचकूपी आदि विषयों का अनेक बिम्बों और प्रतीकों के माध्यम से वर्णन किया है।[7] कचरे के डिब्बों से निकलते बॉम्व जहाँ वर्तमान में आतंकवाद भय और संत्रास की स्थितियों को दर्शाते हैं वहाँ कवि अवकारिका में से चन्द्रशकता निकाल लेता है – प्राप्तोऽयं चन्दशकलो/रिक्तांकृत्पर तमिस्रा ऽ विकारिकाम् व्रणोरुढ़ग्रन्थि – (अवकारिका पृ0–51)

व्रणोरुढ़ ग्रन्थि काव्य संकलन का तृतीय खण्ड 'मृगया' है। कवि ने उस मृगत्व (लघु रूप) का वर्णन किया है जो स्वयं के सामने अन्य किसी के विषय में नहीं सोचता। वर्तमान में भय व संत्रास में जी रहे मनुष्य की तुलना उन्होंने 'मृग' से की है। शिकारी के बाण के भय से भयभीत मृग की लघुता–भीरूता–दीनता वास्तव में वर्तमान मनुष्य की मनोग्रन्थियों का पर्याय बन गयी है। लघु से मुक्ति के लिए मृगत्व से मुक्ति ही मानो एकमात्र विकल्प है। वर्तमान के आतंकवाद, पर्यावरण प्रदूषण इत्यादि समस्यायें मृगया के ही नवसंस्करण है; मृग (मनुष्य का लघुता) की मृत्यु ही मृगया का फल है।[8] मानचित्र पूरण–प्रश्न में वर्तमान व्यवस्था के सम्बन्ध में किये गये प्रश्न है। वस्तुतः भारत के मानचित्र पर आज ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ निर्धनता, भ्रष्टाचार, रिश्वत और अनैतिकता न हो। इसी प्रकार 'हंसा' कविता में कवि ने मुम्बई के महानगरीय जीवन की विभीषिका का वर्णन किया है। रेल के डिब्बों में लोहदण्ड ग्रहण करने में व्यस्त हाथ, नेपीयन्सी के रास्ते पर रेडलाइट के प्रकाश में बढ़ते कामुक हाथ, 'धारावी' में श्रमिकों के घरों में शराब की बोतलें खोलते हाथ, बाबुलनाथ मंदिर पर भिक्षा के लिए फैले हाथ, भीड़ में यात्रियों की

पाकेट मारते हाथ और मेरीन ड्राइव में यंत्रगति प्राप्त हाथों के अनवरत संघर्ष को देख कवि इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि इन हाथों में जीवन रेखायें ही नहीं, केवल मृत्यु रेखायें है।[9]

व्रणोरुढ़ ग्रन्थि में बिम्बों का प्रयोग विभिन्न मिथकों के साथ भी किया गया है। व्रण को दशमुख हो जाना पीड़ा की अधिकता और आचार को व्यक्त है।[10] व्रण को यद्यपि प्रकारों में नहीं बाँटा जा सकता क्योंकि घाव तो केवल घाव ही होता है जिसका प्रतिफल पीड़ा ही है परन्तु कवि ने एक स्थान पर व्रण को विभिन्न रंगों से परिभाषित करते हुए उसकी अनुभूति बदल दी है यह रंग पूर्ण घाव बिम्ब है। इसी प्रकार चन्द्रिका सदैव से कवियों के हृदय में राग, आनन्द, संयेाग और प्रेम की स्थितियाँ उत्पन्न करती हैं। विरह में यही चाँदनी अग्नि तो बन सकती है किन्तु उसे कफन बना देना निःसन्देह विलक्षण है। बाम्ब विस्फोट से नगर में यह चाँदनी न सुख दे रही न दुःख। एक नीरवता फैली हुई है चारो ओर नगर सो गया है ओढ़कर कफन।[11]

श्री हर्षदेव माधव नवीन प्रयोग धर्मिता के कवि है अतः अंग्रेजी भाषा के शब्दों के लिए संस्कृत में नवीन शब्द गढ़ते चले जाते हैं जैसे बोनस के लिए 'लाभांश', पेट्रोल पम्प के लिए 'इन्धन पूरण स्थानं', स्क्रीन के लिए 'काचपटल' बेवसाइट के लिए 'जालपुरात', साफ्टवेयर के लिए 'मृदुप्रणाल्या', मिसकाल' के लिए मोध्राह्वान, डस्टबिन के लिए 'अवकरिका' आदि अनेकानेक शब्दों का उन्होंने संस्कृत में अनुवाद किया है। कुछ शब्द बिना किसी परिवर्तन के ज्यों के त्यों ग्रहण कर लिये गये हैं। जैसे रेलवे, पलास्टिक पुष्प, एण्टीमेटर, सोक्रेटिसाय। कुछ अन्य भाषाओं के शब्द जैसे त्वमसि के लिए अनलहक्क, कफन, फतिहा आदि के प्रयोग भी किये हैं।

हर्षदेव माधव के वर्णनीय प्रसंग प्रायः लीक से हटकर और नवीन हैं। जिन विषयों पर कवि प्रायः विचार नहीं करते उन पर वे कविता लिख देते हैं। अनेक अस्पृश्य बिम्ब और प्रतीकों से उन्होंने अपनी कविता को सुशोभित किया है। जीवन का शायद ही ऐसा प्रसंग हो जो

हर्षदेव माधव से छूटा हो। व्रणोरुढ़ ग्रन्थि में राजस, तामस, और सात्विक व्रणों की चर्चा है, वीत, राग, भय, क्रोध से उत्पन्न व्रणों से मुनिभाव के प्राप्त होने की स्वीकृति है और करूणाशलता से महावीरत्व की प्राप्ति की सूचना है। यह समस्त प्रतीक निःसन्देह कवि को उसके सृजन की सार्थकता प्रदान करते है। कवि ने वर्तमान मनुष्य की मनुष्यता पर प्रश्नचिह्न लगाया है और मनुष्य के विविध अंगों में शृगाल, वृक, सर्प, व्याघ्र, वानर, उल्लू, कुत्ता, बिडाल आदि का प्रतीक मानकर उनके चरित्र का पारदर्शी वर्णन किया है। ऐसी स्थिति में मनुष्य के अन्दर मनुष्यता कितनी शेष रह गयी है।[12]

इसके अतिरिक्त कवि ने एक दुर्लभ प्रयोग इस ग्रन्थ में कया है। ज्योतिष में वर्णित राशिफल में वस्तुतः व्यक्ति का मनोवृत्ति की व्याख्या है। व्यक्ति के व्यक्तित्त्व और मनोविज्ञान की प्रतीक है विभिन्न राशियाँ। मेष, वृषम्, मिथुन आदि द्वारा मनुष्य की क्रिया में प्रभावित हो सकती है, उनके विचार भिन्न–भिन्न हो सकते है परन्तु बाध्यारोपण द्वारा उन्हें बदला नहीं जा सकता जैसे कवि सिंह राशि के सिंहत्त्व को वियाग्रा की गोली द्वारा प्राप्त नहीं मानता। कुम्भ के कुम्भत्त्व में ही जल निहित है, रिक्तता में नहीं, ऐसे प्रयोगों द्वारा राशिफल की राशियों में हर्षदेव माधव द्वारा कुछ अतिरंजित स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। इसलिए राशिचक्र का यह वर्णन सामान्य पाठक की प्रज्ञा द्वारा ग्रहण करना दुष्कर है।

व्रणोरूढ़ ग्रन्थि में समस्त जीवन की पीड़ा घनीभूत होकर कवि को संतप्त करती है। कोई भी बिम्ब अथवा प्रतीक कविता में हठधर्मिता से नहीं उतारे गये हैं। जब–जब हृदय का कोई व्रण फूटता है तो कविता बन जाती है। हर्षदेव माधव में ग्रन्थियों से मुक्त होने की इच्छा है जिनको उन्हें बचपन से आज तक इस समाज ने प्रदान किया है। भले ही वह मित्रों का विश्वासघात हो, संबंधियों द्वारा किया गया उपहास हो अथवा सामाजिक विद्रूपताओं का प्रहार हो।

आहत हुए मन का रुढ़ ग्रन्थियाँ कभी तो खुलनी ही चाहिए। हर्षदेव माधव सप्रयोग कोई चमत्कार करने की बात भले ही स्वीकार न करे किन्तु उन्हें भीड़ का भाग बनने की आदत नहीं है। यही कारण है कि निरन्तर आलोचनाओं का पात्र बनने पर भी उन्होंने अपनी रचना धर्मिता से कोई समझौता नहीं किया हो चाटुकारिता से वह सदैव दूर रहे हैं। वह हठी है किन्तु विनम्रता को भी साथ रखा है।

हर्षदेव माधव का शब्द चातुर्य भावों से समृद्ध है परन्तु प्रायः व्याकरणिक त्रुटियों के लिए सदैव उनकी आलोचना की जाती रही। सम्भवतः वह आचार्य बाद में है कवि पहले है। अतः अर्वाचीन संस्कृत को वैश्विक फलक पर स्थापित करने वाले इस कवि के लिए वह आचार्यत्व गौढ़ हो गया है।

वस्तुतः इस काव्य–संग्रह में बहुत से प्रश्न अनुत्तरित है। सामाजिक समस्यायें, कुण्ठाएँ और रुढ़ियाँ बढ़ते–बढ़ते ग्रन्थि बन गयी है। इस ग्रन्थि को तोड़ने पर पीड़ा तो होना स्वाभाविक है किन्तु समाज के यथार्थ से भी तो मुँह नहीं मोड़ा जा सकता। इस पीड़ा को सहन का साहस आवश्यक है।

सन्दर्भ

1. व्रणलियौ / यल्लिखितमस्ति / तद्वाचयितुं स्निग्धजनह्रदयमपि / अपेक्ष्यते / अन्यथा / तिष्ठतु तदविभक्तमेव शतधा विभक्ते ह्रदये / व्रणोरुढ़ग्रन्थि

   पृ0सं0–110–111

2. शिशुचरणधूलिघूसरां शाटी विलोक्य / रजोमिरस्पृष्टा स्वच्छा शाटी / रोदिति।

   वही (शांती पृ0–25)

3. दुःशासनोऽपहरेत तत्पूर्वभव स्रंसतेशाटी

दुःशासनो लज्जते दुर्योधनश्छायाचित्रग्रहण व्यस्तः

भीष्मा दूरदर्शनवीक्षणरता सान्त्सिद्रोणाचार्यावृत्रपत्राणि पश्यन्ति

कृष्णस्य दूरभाषः यन्त्रमर्यादाक्षेत्राद् बहिर्वर्वते

शरीराद् वियुक्ताशांती जोषमास्ते मंचे। वही पृ0–26

4. ब्रणाहतंमनो/कीलकबङ्गं वत्सकं भूत्वा न स्पन्दते।

बधिरा त्वक् चीरकारशून्या जाता।

निर्वीर्योजात उत्साह रुढ़ग्रन्थिव्रणी भवोन्निर्मूलः

किन्तु तस्य चिह्नमंकितं भविष्यति तत्रैव।

मनसा। तदा। दशमुखे ब्रणः हसिष्यति कुटिलतया

वही, पृ0–108–109

5. स्यूतान वहतांशिशुकानां शैशवं

पुस्तकैः गृहकायैः शिक्षकैः लुष्ठित वस्तुनो

ले खिताभियोगार्थः नास्ति पुलिसस्थानकमपि

6. हे कालिदास/पदं सहत भ्रममपश्य पेलवंशिषिपुष्पं।

नः पुनः पतित्रिले किंतु।

अत्र शिरीष कोमलपुष्पेषु निहिताः।

ज्ञान–सूचना–ग्रन्थपर्वताः।। वही, पृ0–46

7. अवकरिकाबन्ध्यां/मामन्यस्य/असावपि प्रसूते

जीवतो वाम्बासुरान। वही, पृ0–51

8. व्याधानां नामानि परिवर्तनाधिगच्छति।

किन्तु मृगस्य मृत्युमृगयायाः फलमस्ति, वही, पृ0–157

9. एतेषु हस्तेषु / जीवनरेखा न सन्ति,

केवलं सन्ति मृत्युरेखा वही, पृ0–174

10. मनसा तदा दशमुखो व्रणःहसिष्यति कुटिलतया वही, पृ0–109

11. चन्द्रिकायाः श्वेत 'कफनं' शववस्त्रं परिधायनगरसुप्तमस्ति

वही, पृ0–152

12. मनुष्यस्य वक्षसिनिवसति शृगालः

दृष्टया भ्रमति वृक

वाण्या स्पन्दते द्विजिह्वः

गले व्रवीति साहंकार कौशिकः

शिश्नेरमते कुक्कुरः

मुखनेपथ्ये कुतिलं हसति बिडालः

अतः प्राणिन दृष्टवा कमपि

तस्मिन् पश्याम्यहं मनुष्याशस्य प्रतिबिम्बम, वही पृ0–84